May 2011						
M	T	W	T	F	S	S
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

M.A. 3rd sem

Kumari Manju
अ.O.D R.M.C.

Page No 1

M.A.P.

Ques: Distinguish between incidence and effect of taxation. How can incidence of a tax be measured?

~~Ans~~ (कर-भार एवं कर-प्रभाव में अन्तर स्पष्ट कीजिए। किसी कर के भार को माप किस प्रकार की जा सकती है?)

Ans: कर भार की धारणा को सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए इसमें तथा कर के प्रभाव के अन्तर को समझना आवश्यक है। इस अन्तर को स्पष्ट करने के लिए डॉल्टन ने कर के प्रत्यक्ष एवं परोक्ष तथा मौद्रिक एवं वास्तविक भार में अन्तर किया है। किसी कर के कुल प्रत्यक्ष मौद्रिक भार को कर भार कहा गया है और यह भार कर से प्राप्त राशि के बराबर होता है। जैसे यदि 50 रुपया कर के रूप में यदि व्यक्ति देता है तो और इसके भुगतान में जितना त्याग करना पड़ता है उसको आर्थिक त्याग 50 रुपया देने में जितना करना पड़ेगा यह कर का प्रत्यक्ष वास्तविक भार कहलाता है और इसकी प्रभावकारी प्रवृत्ति द्वारा कर भार की निर्धारण नहीं है। जैसे मान लें कि कर के कारण चीनी की कीमत बढ़ जाती है जिससे वृद्धि के कारण लोग चीनी का उपभोग कम कर देते हैं जिससे उनके आर्थिक कल्याण में कमी हो जाती है, यह कर का भार ही निर्धारण नहीं है बल्कि परोक्ष

Sunday 03

वास्तविक भार की है। अब मान लें कि चीनी पर लगे कर को विक्रेता से वसूल कर लिया जाता है तथा कर के भुगतान के कुछ समय बाद ही चीनी बिक पाती है। इस अवधि में विक्रेता को कर की रकम पर निश्चित ब्याज का नुकसान सहना पड़ता है, यह कर भार कर देने के टोटल परोक्ष मौद्रिक भार की निर्धारण है। कर भार तथा कर प्रभाव

अन्तरों को स्पष्ट करते हुए डाल्टन का कहना है कि कर भारण का विश्लेषण केवल कर के प्रत्यक्ष मौद्रिक भार को जानना है जबकि कर के अन्य तीनों प्रभावों (परोक्ष मौद्रिक भार, प्रत्यक्ष वास्तविक भार एवं परोक्ष वास्तविक भार) का अध्ययन कर के प्रभाव के अन्तर्गत किया जाता है।

Pantaleoni (पैन्टालियोनी) ने कर भार तथा कर प्रभाव के अन्तर को एक उपमा के माध्यम से स्पष्ट किया है। मान ले कि एक तिन (तालाब) में एक पत्थर फेंका जाता है जिससे लहरें पैदा होती हैं। निकट वाली ऊँची लहरों को कर भार कहा जायेगा, जबकि दूर की हल्की लहरों को कर प्रभाव। कर प्रभाव एक अर्थ में अवशेष (Residue) है और कर के प्रत्यक्ष मौद्रिक भार का हिस्सा नहीं है। Musgrave (मसग्रेव) ने कर भारतथा कर प्रभाव के अन्तर को अनुचित ठहराया है और डंकन तथा ब्लैक (Duncan Black) ने विचार से असहमति प्रकट की है कि इन दोनों के मध्य कोई अन्तर नहीं होना चाहिए। ~~...~~ Duncan तथा Black दोनों ने कहा है कि कर भार की धारणा को व्यापक अर्थ में लेना चाहिए तथा कर के सामान्य प्रभाव पर भी विचार करना चाहिए। Musgrave इस विचार से सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि कर भार तथा कर प्रभाव के मध्य अन्तर बनाये रखना चाहिए चाहे रहे कि उन्होंने भार को व्यावहारिक परिस्थितियों से अलग इसको वितरणात्मक परिवर्तन के रूप में ही देखा है। Musgrave के अनुसार पहले 1927 में कोलविन समिति (Colwyn Committee) ने भी

भार की धारणा की संकुचित व्याख्या कर तथा इसे कर के अल्पकालीन वितरण सम्बन्धी प्रभाव के क्षेत्र में उत्पत्ति तथा उत्पादन के साधनों की पूर्ति पर पड़ने वाले दीर्घकालीन प्रभावों को शामिल किया। कर भार की धारणा की यह व्याख्या Musgrave ने प्रस्तुत की है जिनके कारण लेखकों में आम सहमति पायी जाती है कि एक ओर कर के वितरण सम्बन्धी प्रभाव अर्थात् कर भार तथा दूसरी ओर मूल्य स्फीति, ~~के कारण~~ अवस्फीति एवं अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी के क्षेत्र में परिवर्तन, आदि प्रभावों को पृथक रखना उचित होगा। कर भार के विश्लेषण से समग्र माँग के क्षेत्र को स्थिर मान लिया जाता है, जबकि समष्टि प्रभावों की व्याख्या करते समय इस माँग के क्षेत्र में आवश्यकतानुसार कमी-बेशी की जाती है। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि कर भार विश्लेषण का सम्बन्ध सापेक्ष कीमतों से है, निरपेक्ष कीमतों से नहीं।

<u>कर भार की माप</u>: कर भार का सम्बन्ध इस बात से है कि कर के बोझ का वितरण किस प्रकार होता है उसे जाना जाय। इसलिए अब ~~यह देखा जाना चाहिए कि~~ इसे समझना है कि इस बोझ के वितरण को किस प्रकार मापा जा सकता है। इसके लिए सर्वप्रथम यह याद रखना होगा कि कर के सम्पूर्ण बोझ अन्ततः व्यक्तियों द्वारा वहन किये जाते हैं। यही कारण है कि कर बोझ के वितरण के अध्ययन में हमारा सम्बन्ध व्यक्तियों या परिवारों पर इसके भार से है। किसी भी देश में लाखों करोड़ों की संख्या में करदाता हुआ करते हैं। इसलिए निगम कर के व्यक्ति पर मूल्य सम्बन्धित करना सम्भव

कर के स्थान पर बिक्री कर लगाने के कारण वितरण सम्बन्धी परिवर्तनों का अध्ययन करते आकृतियों का वर्गों के विषय में करना चाहिए किन्तु ऐसा संभव नहीं है कि करोड़ों करदाताओं में से प्रत्येक पर कर के बोझ के वितरण के प्रभाव का अध्ययन किया जाय। इसी कारण आकृतियों को वर्गों में बाँट लिया जाता है। आय के आधार पर जैसे उच्च आय वाला वर्ग, मध्यम आय वाला वर्ग, निम्न आय वाला वर्ग आदि। इसके बाद 'वर्गों पर कर के बोझ' के वितरण के प्रभाव की विवेचना की जाती है कि किस वर्ग की स्थिति सुधरती है तथा किसकी बिगड़ती है।

कर भार के माप के अन्तर्गत यह विवेचना की जाती है कि कर के स्थान पर दूसरा कर लगाने पर वितरण की स्थिति में क्या परिवर्तन होता है अर्थात् आय का वितरण कर में परिवर्तन के बाद अधिक समान होता है या अधिक असमान। किसी कर में किए गए परिवर्तन के पूर्व एवं पश्चात् वितरण की स्थिति की तुलना करके ही भार को मापा जाता है। इसे निम्न चित्र की सहायता से समझा जा सकता है।

इस चित्र में Y अक्ष पर अन्तिम आय के संचयी प्रतिशत को तथा X अक्ष पर परिवारों के संचयी प्रतिशत को मापा गया है। OB रेखा समान वितरण की रेखा है अर्थात् 10 प्रतिशत निम्न आय वाले परिवारों को 10 प्रतिशत आय प्राप्त होगी

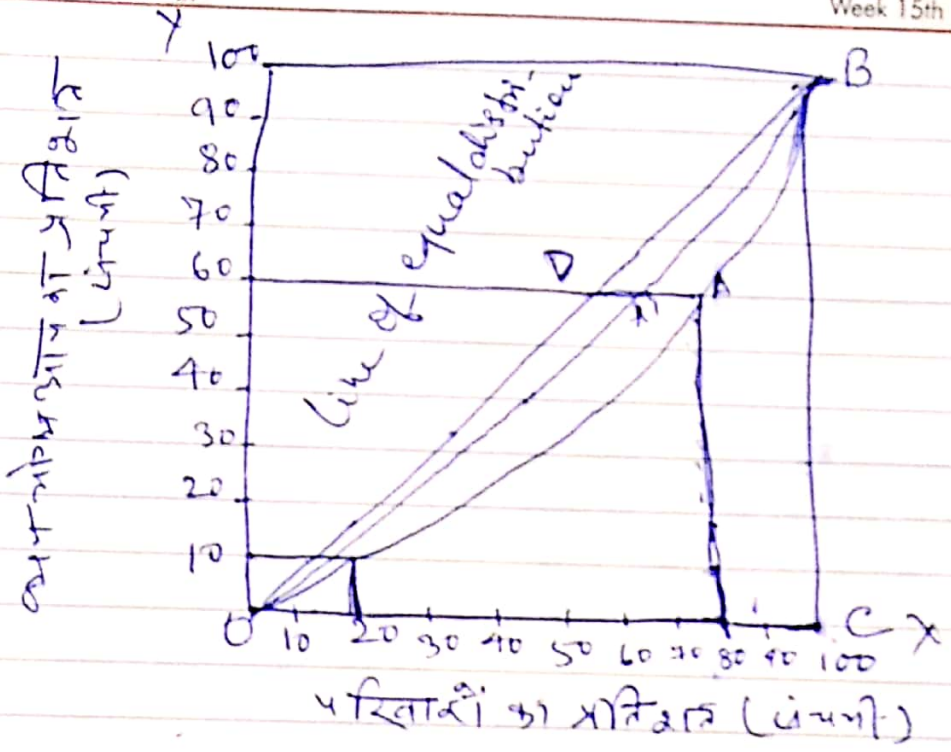

है, 20 प्रतिशत परिवारों को 20 प्रतिशत आय आदि। अब मान लें कि कर में परिवर्तन के बाद वितरण की स्थिति OAB रेखा से बताई जाती है। इसके अनुसार 20 प्रतिशत न्यूनतम आय वाले परिवारों को 10 प्रतिशत आय प्राप्त होती है, 80 प्रतिशत न्यूनतम आय वाले परिवारों को 62 प्रतिशत आय आदि। यह आय असमान वितरण का एक नमूना है तथा OABC/OBC समानता का सूचकांक (index of equality) है। पूर्णतः समान वितरण की स्थिति में यह अनुपात 1 होगा।

अब मान लें कि कर के परिवर्तन करने (मान लें कि आय कर के स्थान पर मूल्य संवर्धित कर लगाया जाता है) का परिणाम यह होता है कि OA'B वक्र के स्थान पर OAB वक्र प्राप्त होता है। इसका यह अर्थ है कि वितरण अधिक समान हो जाता है क्योंकि ~~OA'BC~~ OA'BC/OBC > OABC/OBC। इसका अर्थ यह है कि कर में परिवर्तन के कारण कर का ढाँचा अधिक प्रगतिशील हो जाता है।